International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 37-39

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 37-39
www.allresearchjournal.com
Received: 21-06-2015
Accepted: 26-07-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग रा; म; वि; ढलियारा; कांगडा हि;प्र;

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग रा; म; वि; ढलियारा; कांगडा हि;प्र;

बहुप्रतिभा के स्वामी–कविवर बिहारीलाल

शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य को प्रतिभाशाली लेखकों ने आलोकित किया है। बहुआयामी प्रतिभाओं ने अपने ज्ञान और अलौकिक प्रतिभा से इस साहित्य को श्रेष्ठ साहित्य की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।इन श्रेष्ठ कवियों में बहुज्ञ कविवर बिहारी का नाम निर्विवाद सर्वोपरि रखा जा सकता है। अनेक कवि अपनी प्रतिभा एवं ज्ञान के कारण श्रेष्ठ कवियों की श्रेणी में गिने जा सकते हैं परन्तु बहुआयामी कवियों की कोटि में सर्वश्रेष्ठ कवि कविवर बिहारी लाल सिद्ध होते हैं।कविवर बिहारी को समग्र साहित्य के विविध रूपों का प्रभूत ज्ञान था।उन्होंने लोक जीवन का गहराई से अध्ययन किया था।बिहारी की सतसई में साहित्यशास्त्र के साथसाथ अन्य शास्त्रों का ज्ञान भी मिलता है। अपने पिता केशव राय के अतिरिक्त श्री नरहरिदास से विविध शास्त्रों का ज्ञान इन्होंने प्राप्त किया।राजाश्रय प्राप्त करने के कारण बिहारी को राजनीति के अन्तर्गत राजदरबारों का ज्ञान भी प्राप्त था। उनके काव्य में ज्योतिष; गणित ;विज्ञान; वैद्यक ;धर्म; दर्शन ; नीति; आदि का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विद्यापति ;जायसी सूर तुलसी मीरा प्रसाद और गुप्त सभी को विविध विषयों का ज्ञान था परन्तु बहुज्ञता के लिए बिहारी प्रसिद्ध हैं।बिहारी निस्सन्देह बहुज्ञ एवं चतुर्दिक प्रतिभा वाले कवि थे।उनकी प्रतिभा की निम्नलिखित कुछ विशेषताएं उन्हें अन्य कवियों से स्वयं ही अलग कर देतीं हैं।

1. संस्कृत एव ंप्राकृत के विद्वान

बिहारी लाल संस्कृत के अतिरिक्त प्राकृत के भी विद्वान थे।अमरूशतक ;आर्यसप्तशती गीतगोबिन्दम का प्रभाव बिहारी की सतसई में देखा जा सकता है।गाथासप्तशती प्राकृत की प्रसिद्ध रचना का प्रभाव भी उनकी सतसई पर है।एक उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट करने में समर्थ है–

जनण कोस विकास पावइ ;ईदसी भालई कलिया। [1]
मअरन्द पाण लोहिलल भमर ताविच्चअ मलेसि । – गाथा सप्तशती

इन पंक्तियों का बिहारी सतसई में अनुवाद देखिए–.

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहिं काल ।[2]
अलि कलि ही सों बंध्यौ आगे कौन हवाल ।।

इसके अतिरिक्त अमरूशतक का प्रभाव सतसई के अनेक दोहों पर स्पष्ट दिखाई देता है। एक उदाहरण देखिए–

शून्यं वासगृहं विलोक्य शयना उत्थाय किंचित्वैव [3]
निद्राव्याजमुपागतस्य सुचिरं निर्वण्य पत्युर्मुखं ।
निसब्धं परिचुम्ब्य जातपुलकामालोक्य गण्डस्थलीं
लज्जां नम्रमुखी प्रियेण हस्ता बालापरिचुम्बिता ।। – अमरूशतक

कविवर बिहारी का अक्षरश अनुवाद देखिए–

मैं मि सहा सोयौ समुझि मुंह चूम्यौ ढिंग जाइ।
हंस्यौ खिस्यानी गल गहयौ रही गरै लपटाइ।। [4]

2. साहित्य– शास्त्र का ज्ञान

बिहारी ने किसी लक्षण ग्रंथ की रचना नहीं की परन्तु उनकी सतसई में अनेक स्थलों पर भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धांतो का अनुपालन कलात्मक ढंग से किया गया है। रस अलंकार ध्वनि वक्रोक्ति औचित्य आदि का निरूपण सतसई में दर्शनीय है। नायक नायिका भेद तथा नखशिख वर्णन देखकर लगता है जैसे बिहारी नाटयशास्त्र के प्रबुद्ध विद्वान हों।एक उदाहरण शुक्लाभिसारिका नायिका का देखिए–

जुबति जोन्ह मैं मिलि गई नैंक न होति लखाइ। [5]
सौंधे कै डौरै लगी अली चली संग जाइ ।।

3. गणित शास्त्र का ज्ञान

कविवर बिहारी गणितशास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। उन्होंने एक दोहे में गणित शास्त्र के ज्ञान का सुन्दर परिचय दिया है–

कहत सबै बैदी दिए आंकु दस गुनौ होतु ।
तिय लिलार बेंदी दिये अगिनितु बढतउदोतु ।।
कुटिल अलक छुटिपरत मुख बढिगौ इतौ उदोतु।
बंक बिहारी देत ज्यौं दाम रूपैया होतु ।।

4. दर्शन शास्त्र का ज्ञान

बिहारी दर्शन शास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे ।सतसईमें कुछ दार्शनिक सिद्धान्तों का वर्णन बिहारी के दार्शनिक ज्ञान का पुष्ट प्रमाण है।प्रतिबिम्बवाद का एक उदाहरण देखिए–

हौंसमुझयौ निरधार यह जगु कांचौ कांचु सौ ।
एके रूप अपार प्रतिबिम्बित लखियतु जहां ।।

इसी तरह एक दोहे में कवि ने प्रमाणवाद की विवेचना भी की है–

बुधि अनुमान; प्रमाण श्रुति किये नीठि ठहराय।
सूक्षमगति परब्रहम की अलख लखी नहि जाय ।।

इसके अतिरिक्त कवि ने कुछ दोहों में अद्वैतवादी मान्यता; संसार के सभी पदार्थों में एक तत्व की प्रधानता तथा संसार की हर चीज में ब्रह्म की सत्ता को मान्यता दी है।

5. भक्ति भावना

बिहारी उच्चकोटि के भक्त थे।श्रृगार के कवि होते हुए भी बिहारी ने भक्ति परक दोहों की सुन्दर रचना की है।कृष्ण आराधना; राधा विषयकदोहे निर्गुण सगुणपरक दोहों से अपनी रचना को सजाया है।उन्होंने बाह्य आडम्बरों ;मोहमाया विषयक अनेक दोहों की रचना पूर्ण अधिकार से की है।ऐसा लगता हैकि भक्ति सिद्धान्तों का ज्ञान उन्हें पर्याप्त था–

1 मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ।[6]
जा तन की झांइ परै स्याम हरित दुतिहोइ।।

भक्ति की उमंग में सन्त रविदास की तरह उनका परिहास द्रष्टव्यहै–

कब कौ टेरतु दीन रट होत न स्याम सहाय ।
तुमहूं लगी जगत गुरु जगनायक जग बाय ।।

6. ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान

बिहारी लाल ज्योतिष केबहुत अच्छे ज्ञाता थे।उन्हें ज्योतिष के अनेक योगों का ज्ञान था। बिहारी ने एक दोहे में ज्योतिष शास्त्र के अनुसार एकप्रसिद्ध योग राजयोग का उल्लेख बडे ही सुन्दर ढंग से किया है। उन्होंने लिखा है कि यदिमीन लग्न में शनि हो तो वह जातक राज्य प्राप्त करता है–

सनि कज्जल चख–झक लगन उपज्यौ सुदिन सनेहु।
क्यों न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेसु सब देहु ।।

ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ जातक संग्रह के निम्न लिखित श्लोक का अक्षरश अनुवाद उपरोक्त दोहे में देखा जा सकता है–

तुलाकोदण्डमीनस्थो लग्नस्तोपि शनैश्चर ।[8]
करोति नृपतेर्जन्म वंशे च नृपतेर्भवेत ।।

अर्थात् यदि जातक के जन्म लग्न में तुला धनु और मीन के शनि स्थित हों तो वह बालक राजवंश में जन्म लेता है।इसी तरह एक और प्रसिद्ध योग जारज योग का उल्लेख करके बिहारी ने ज्योतिष शास्त्र के अच्छे ज्ञाता होने का परिचय दिया है; उदाहरण देखिए–

चित–पितु मारक योग गनि भयो भये सुत सोगु ।
फिरि हुलस्यौ जिइ जोइसी समुझे जारज जोगु।।
भाल लाल बेंदी ललन आखत रहे विराजि ।
इन्दुकला कुंज में दुरि मनौ राहु–भय भाजि ।।

7. राजनीति शास्त्र का ज्ञान

बिहारी लाल राजनीतिक क्षेत्र के अच्छे ज्ञाता थे।उन्होंने अधिकांश समय राजाश्रय में बिताया था इस लिए उन्हें साहित्य के अतिरिक्त राजनीति के दाव पेच एवं तात्कालिक शासन प्रणाली की बारीकियों का समुचितज्ञान था। उनके दोहों को पढ कर यह बात स्वयं स्पष्ट हो जाती है।कुछ उदाहरणों से यह बात सिद्ध हो जाती है–

क –दुसह दुराज प्रजानिकौ ; क्यौं न बढे दुख दंद ।
अधिक अंधेरी जग करत मिलि मावस रवि चंद।।

इसी तरह एक और दोहै में कवि ने शत्रु के सुदृढ किले को सुरंग बनाकर उस पर विजय पाने के लिए राजनीतिक चाल का सुन्दर वर्णन किया है

क्यों हूं सहबात न लगै थाके भेद उपाय ।
हठ दृढ गढकगढवै सुचि लीजै सुरग लगाय।।

इसके अतिरिक्त राजनीति के सातों अंगो की तुलना नायिका के अंगों से करके बिहारी ने राजनीतिक ज्ञान का परिचय दिया है–

अपने अंग के जानि कै जोवन–नृपति प्रवीण ।
स्तन मन नैन नितम्ब कौ बडौ इजाफा कीन ।।

8. वैद्यक शास्त्र का ज्ञान

बिहारी बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे।उन्हें अन्य शास्त्रों के ज्ञान के अतिरिक्तवैद्यक ज्ञान भी पर्याप्त था। उन्होंने आयुर्वेद शास्त्र के आधार पर कुछ दोहों की रचना की है।उन्हें नाडी ज्ञान तथा रोग निदान का पर्याप्त ज्ञान था। उदाहरण देखिए–

मैं लखि नारि ज्ञान करि राख्यौ निरधारू यहै।
बहई रोगु निदान बहै वैद औषधि ब है।।

यही नहीं भयंकर बुखार एवं उसके उपचार हेतु प्रसिद्ध सुदर्शन चूर्ण का उल्लेख उनके वैद्यक ज्ञान का प्रमाण है–

यह विनसतु नगु राखिकैं जगत बडौ जस लेहु।
जरी विषम जुर ज्याइये आइ सुदरसन देहु ।।

9. मनोविज्ञान का सम्यक ज्ञान
बिहारी की उक्ति विचित्रता सर्वत्र सतसई में देखी जा सकती है।मानव मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान उन्हें था। बिहारी जानते थे कि लोग गलत तरीके एवं चाटुकारिता के बल पर उच्च पद प्राप्त कर लेते हैं। इनकी तुलना कवि ने कौए से कर के करारी चोट की है–

दिन दस आदरू पाइकै करि लै आपु बखानु ।
जौ लगि काग सराध पखु तौ लगि तौ सनमानु।।

इसी प्रकार नीच व्यक्ति चाहे कितने भी उच्च पद पर पहुंच जाए नीच प्रकृति का व्यक्ति नीच ही रहता है–

कोटि जतन कोउ करो परै न प्रकृतिहिं बीच।
नल बल जल उंचौ चढै अन्त नीच को नीच ।।

10. नीति शास्त्र का ज्ञान –
क्वि बिहारी लाल अन्य विषयों के ज्ञाता होने के साथ साथ नी ति शास्त्र के भी बहुत अच्छे ज्ञाता थे यह सहज ही उनकी रचना सतसई से प्रतीत हो जाता है। उनके कुछ नीति परक दोहे संस्कृत की नीति परक छोटी छोटीकथाओं की तरहअत्यन्त मार्मिक तो हैं ही शिक्षा प्रद भी है।इससे आभास होता है कि बिहारी नी ति शास्त्र के भी अच्छे विद्वान थे। उनके कुछ इस प्रकार के दोहे द्रष्टव्य हैं–

क– नर की अरू नल नीर की गति एकै करि जोइ।
जैसी नीचौ ह्वै चलै तेतौ उंचौ होइ ।।
ख–बसै बुराइ जासु तन ताही को सनमानु ं
भले भले कहि छोडिए खोटे ग्रह जप दानु।।
ग– कनककनक ते सौ गुणी मादकता अधिकाय ं
या खाये बौराइ जग वा पाये बौराइ ।।
ध– संगति सुमति न पावहिं परे कुमति के धंध ं।
राखी मेलि कपूर में हींग न होत सुगंध ।।

11. संगीत शास्त्र का ज्ञान
थ्बहारी संगीत शास्त्र के भी ज्ञाता थे। सतसई में अनेक ऐसे सन्दर्भ मिलते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि उन्हें संगीत शास्त्र का अच्छा ज्ञान रहा होगा अन्यथा संगीत के विषय में इतनी गहरी पकड कैसे संभव है।उन्हें सुर– ताल का भी गहरा ज्ञान था। एक उदाहरण देखिए–

सुरति न ताल रू तान की उठ्यौ न सुरूं ठहराई ।
ए री रागु विगारि गौ बेरी बोलु सुनाइ ।।

12. पौराणिक शास्त्र का ज्ञान
पौराणिक प्रसंग सतसई में प्राय मिल जाते हैं ं।रामायण महाभारत के अनेक प्रसेग उनकी सतसई में मिलते हैं। कई प्रसंग ऐसे भी मिलते हैं जो भारतीयों के भी ज्ञान में नहीं हैं। रामायण से उद्धृत एक प्रसंग को अपने दोहे में कितनी सुंदरता से ढाला है देखते ही बनता है–

बसि संकोच दस बदन बस सांचु दिखावति बाल ं।
सिय लौं सोधति तिय तिनहिं लगनि अगनि की ज्वाल ।।

महाभारत से भी कुछ उपमान उठाए गए हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

रह्यो ऐंचि अंतु न लहयौ अवधि दुसासन वीर।
आली बाढतु विरह ज्यों पांचाली को चीर ।।

13. लोक जीवन का ज्ञान
बिहारी सतसई में लोक जीवन के विभिन्न रंगों एवं पक्षों का बडा सुन्दर वर्णन देखने को मिलता है।इस से पता चलता है कि बिहारी को लोकजीवन का कितनी गहराई से ज्ञान था।उनके दोहों में पर्वो नाटकीय खेलों पतंग बाजी चोर–मिचौनी लट्टू नचाना एवं भारतीय संस्कृति के अनेक रंगों का उल्लेख इस बात का प्रमाण है कि उनसे कुछ भी छुपा नहीं था। प्रसिद्ध तीज त्यौहार का उल्लेख उनके दोहे में द्रष्टव्य है–

तीज पख सखियन सजै भूषण वसन शरीर।
सबै मरगजे मुंह करी बहै मरगजै चीर।।

इसके अतिरिक्त बिहारी ने काम शास्त्र अश्वशास्त्र रत्न शास्त्र एवं पाक शास्त्र विभिन्न विषयों पर दोहे लिख कर अद्भुत योग्यता का परिचय दिया है। श्रृगार प्रधान रचना होते हुए भी बिहारी के दोहे भक्ति हे क्षेत्र में अद्भुत हैं.
उदाहरण देखिए–

क– तौ लगि या मन सदन में हरि आवें किहिं वाट।
विकट जरे जौ लौं निपट खुले न कपट कपाट ।
ख– जप माला छापा तिलक सरै न एकौ कामु।
मन कांचै नाचै वृथा सांचै राचै रामु ।।

ठस तरह नि स्संदेह बिहारी बहु आयामी प्रतिभा के स्वामी थे उन्होंने अपवी एकमात्र रचना सतसई के माध्यम से विविध विषयों के ज्ञान का परिचय दिया है। यह सत्य है कि उनकी योग्यता को परखने के लिए कुछ प्रसंग पर्याप्त नहीं होंगे फिर भी इतना मो स्पष्ट हैकि बिहारी की अभिरूचि अनेक शास्त्रों में थी तथा उनका ज्ञान भी पर्याप्त था ।

संदर्भ सूचि

1. गाथा सप्तशती
2. बिहारी रन्नाकर – पं जगन्नाथ दास रत्नाकर
3. अमरू शतक पृ–48
4. बिहारी रत्नाकर
5. उपरोक्त
6. उपरोक्त
7. बिहारी सतसई – भक्ति परक दोहे
8. बिहारी रत्नाकर –पं जगन्नाथ दास रत्नाकर